सत्यमेव जयते

भाषा

मार्च–अप्रैल 2018

अध्यक्ष, परामर्श एवं संपादन मंडल
प्रोफेसर अवनीश कुमार

परामर्श मंडल
श्रीमती चित्रा मुद्गल
डॉ. गंगा प्रसाद विमल
डॉ. नरेंद्र मोहन
प्रो. श्याम आर. असोलेकर
श्री राहुल देव
श्री एम. व्यंकटेश्वर
डॉ. मिलन रानी जमातिया

संपादक
डॉ. अनिता डगोरे

सह–संपादक
डॉ. अनुपम माथुर
अच्युत कुमार सिंह

प्रूफ रीडर
इंदु भंडारी

कार्यालयीन व्यवस्था
सेवा सिंह

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

210 CHD/18—1

ISSN 0523-1418
भाषा (द्वैमासिक)
वर्ष : 57 □ अंक : 4 (277)
मार्च–अप्रैल 2018

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.hindinideshalaya.nic.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com

बिक्री केंद्र :

नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली के पक्ष में भेजें।

मूल्य :

1.	एक प्रति का मूल्य	=	रु. 25.00	(डाक खर्च सहित)
2.	वार्षिक सदस्यता शुल्क	=	रु. 125.00	
3.	पंचवर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 625.00	
4.	दस वर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 1250.00	
5.	बीस वर्षीय सदस्यता शुल्क	=	रु. 2500.00	

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : pub.dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689
फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भाषा
मार्च–अप्रैल 2018

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
संपादकीय
आपने लिखा

आलेख

1.	संस्कृत भाषा में आत्मकथा साहित्य	डॉ. अजय कुमार मिश्र	13
2.	हिंदी आत्मकथा का विकास-क्रम	प्रो. सुशील कुमार शर्मा	31
3.	हिंदी साहित्य में स्त्री आत्मकथा	डॉ. वंदना भारती	35
4.	हिंदी की दलित आत्मकथा	डॉ. आलोकरंजन पांडेय	46
5.	हिंदी का समकालीन आत्मकथा साहित्य	डॉ. अनुपम माथुर	57
6.	असमिया आत्मकथा का अतीत	डॉ. अनुशब्द	68
7.	स्वानुभूत सत्य को उजागर करने वाली बंगला महिला आत्मकथाएँ	प्रो. अरुण होता	78
8.	कन्नड का आत्मकथा साहित्य और आलूर वेंकटराव की आत्मकथा "नन्न जीवन स्मृतिगळु"	प्रो. सुनीता मंजनबैल	88
9.	कश्मीरी और डोगरी भाषाओं में आत्मकथा साहित्य	डॉ. महाराज कृष्ण भरत मूसा	95
10.	खासी साहित्य में आत्मकथा: एक अध्ययन	प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार हिंदी अनुवाद : डॉ. जीन एस. ड्खार	107
11.	हिंदी और तमिल की नारी आत्मकथाकार	प्रो. निर्मला एस. मौर्य	117
12.	तेलुगु में आत्मकथा साहित्य	डॉ. जे. एल. रेड्डी	126

मराठी और हिंदी में महिला आत्मकथा

डॉ. गिरीश काशिद

भारतीय साहित्य में आत्मकथानात्मक लेखन के संदर्भ मिलते हैं लेकिन विशुद्ध गद्य आत्मकथा आधुनिक काल में ही विकसित हुई। पाश्चात्य साहित्य के अनुकरण से यह विधा भारतीय साहित्य में विकसित मानी जाती है। आत्मकथा विधा पहले जर्मनी में और बाद में अंग्रेजी में विकसित हुई उन्नीसवीं सदी के आरंभ में पाश्चात्य साहित्य में आत्मकथनात्मक लेखन का आरंभ हुआ। इसके बाद उसका वहाँ बहुमुखी विकास हुआ। भारतीय साहित्य में स्वतंत्र आत्मकथनात्मक लेखन की प्रवृत्ति नहीं मिलती। आरंभिक दौर से मध्यकाल के अंत तक अपने बारे में कुछ कहना तक आत्मप्रौढ़ी माना जाता रहा। वैसे इसका एक सुखद उदाहरण सत्रहवीं सदी के मध्य में मिलता है। सत्रहवीं सदी के मध्य में हिंदी में 'अर्धकथा' नाम में लिखी आत्मकथा का होना एक महत्वपूर्ण घटना है। लेकिन इसके बाद इस विधा का विकास नहीं मिलता है। आधुनिक काल में देश का माहौल बदल गया। सांस्कृतिक संस्थाओं ने भारतीय पुनर्जागरण को गति दी। अंग्रेजों के आचार-विचार तथा जीवन-दर्शन से भारतीय जनमानस प्रभावित हुआ। इससे भारतीय चिंतन की नई दिशाओं का उद्घाटन हुआ। इससे मध्यकालीन साहित्यिक मान्यताओं के स्थान पर नई मान्यताएँ स्थापित हुई। कविता में मुक्तछंद आया और गद्य का अविर्भाव हुआ। यह इस काल के साहित्यिक परिवेश में घटित दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। राष्ट्रीय जागरण के चलते साहित्य के संदर्भ बदल गए। नई चेतना के तहत नए साहित्य का निर्माण होने लगा। यह साहित्य अनुभूति और अभिव्यक्ति की दृष्टि से पूर्व साहित्य से अलग है। आशय और विषय दोनों दृष्टियों से साहित्य में परिवर्तन हुआ। हिंदी में छायावाद काल के दौरान व्यक्ति का महत्व बढ़ा और इससे भी

संदर्भ संकेतः

1. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 52
2. सं.राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, देहरी भई विदेस, पृ. 21
3. आनंद यादव, आत्मचरित्र मीमांसा, पृ. 29
4. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 30
5. डॉ. सुमन राजे, हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, पृ. 238
6. सीमोन द बोउवार, स्त्री उपेक्षिता, पृ. 369
7. सं. कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्शः विविध पहलू, पृ. 86 (बिगबैंग थ्योरी और महिला लेखन, डॉ. आशा उपाध्याय)
8. डॉ. के. एम.शर्मा, स्त्री विमर्शः भारतीय परिप्रेक्ष्य, पृ. 160
9. सं. अरविंद जैन, प्रो. कमलाप्रसाद, स्त्रीः मुक्ति का अपना, पृ. 475
10. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्वर, पृ. 89
11. वीणा आलासे, तीन आत्मकथा, प्रास्ताविक
12. पंकज चतुर्वेदी, आत्मकथा की संस्कृति, पृ. 57
13. डॉ.सरजूप्रसाद मिश्र, हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, आमुख
14. प्रो. नागनाथ कोत्तापल्ले, साहित्य आणि समाज, पृ. 195 (स्त्रीवादी दृष्टिकोनातून स्त्रीसाहित्याचे विहंगमावलोकन, डॉ. विलास खोले)
15. सं. डॉ. मंदा खांडगे, भारतीय भाषातील स्त्रीसाहित्याचा मागोवा-1, पृ. 77 (हिंदी ललितेतर गद्य, डॉ. जया परांजपे)
16. अर्चना वर्मा, अस्मिता विमर्श का स्त्री-स्वर, पृ. 180
17. सं. राजेंद्र यादव, अर्चना वर्मा, देहरी भई विदेस, पृ. 19

– अध्यक्ष, हिंदी विभाग, एस. बी. झेड् महाविद्यालय, बार्शी, जिला-सोलापुर, महाराष्ट्र

❑❑❑

पंजी संख्या. 10646/61
ISSN 0523-1418

भाषा (द्वैमासिक)
BHASHA-BIMONTHLY
पी. ई. डी. 305-2-2018
850

प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली – 110064 द्वारा मुद्रित